मूल्यांकित उत्तरपुस्तिका

1500
2/8/22

दृष्टि
The Vision

हिन्दी साहित्य
(Hindi Literature)

टेस्ट-2
(प्रश्न पत्र-I)

DTVF / OPT-22 **HL-2202**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time Allowed: Three Hours

अधिकतम अंक : 250
Maximum Marks : 250

नाम (Name): DIVYANSHU PAL WALIAR

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 2, 31/07/2022

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2022] [Roll No. UPSC (Pre) Exam-2022]:

1	1	3	9	8	5	9

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

There are EIGHT questions divided in TWO SECTIONS.

Candidate has to attempt FIVE questions in all.

Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any THREE are to be attempted choosing at least ONE question from each section.

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answer must be written in HINDI (Devanagari Script).

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 110½ टिप्पणी (Remarks):

मूल्यांकनकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures) E-516

पुनरीक्षणकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures) R-11

दृष्टि The Vision

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

खण्ड - क

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) दिनकर की कविता 'उर्वशी' का प्रतिपाद्य

दिनकर का रचना संसार उर्वशी, कुरुक्षेत्र, परशुराम की प्रतीक्षा, रश्मिरथी, हुंकार से निर्मित है जिनमें विभिन्न भाव-भूमि के दर्शन होते हैं।

इनकी रचना उर्वशी में मनुष्य की सहज यौन-वृत्तियों तथा आध्यात्मिकता, कर्तव्य आदि के बीच द्वंद्व दिखाया गया है। यह शाश्वत प्रश्न उर्वशी के नायक को भ्रमित करता रहता है।

उर्वशी के माध्यम से दिनकर संतुलन का मार्ग सुझाते हैं तथा सहज तथा नैतिक यौन-चेतना को स्वीकृति देते हैं। उर्वशी के माध्यम से उनकी रचना परलोकवादी तथा सामाजिक संदर्भों से कटे हुए दर्शनों का खंडन करती है।

5/10 थोड़ी और गहराई लाएँ

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) इप्टा का परिचय और महत्त्व

IPTA (इंडियन पीपुल्स थियेटर एसोसिएशन)

1940 के दशक में जन्मा एक संस्थान है। इसका उद्देश्य भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता संघर्ष और फासीवादी शक्तियों के विरोध की पृष्ठभूमि में एक रंगमंच तैयार करना है।

इप्टा से जुड़े व्यक्तित्वों में बलराज साहनी, मोहन राकेश, कैफी आजमी आदि के नाम प्रमुख हैं। 1940 व 50 के दशकों में प्रगतिवादी काव्यधारा के समानांतर इप्टा रंगमंच के माध्यम से सर्वहारा वर्ग के अधिकारों की पैरवी करता है।

इप्टा का महत्त्व प्रसादोत्तर नाटक परम्परा को जनोन्मुख बनाने से देखा जा सकता है। इप्टा की नाटक मंडलियाँ देश के कई राज्यों में घूमकर रंगशालाओं, नुक्कड़ नाटकों आदि के माध्यम से प्रगतिवादी विचारधारा का प्रचार प्रसार करती रही।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

ध्यान देने योग्य बात है कि प्रभाकालीन नाटक अभिजात्यता का आग्रह रखते हैं जबकि इप्टा संस्कृति संस्थाएँ नाटक की सहज अभिनय के माध्यम से जन-जन तक प्रभावित करती हैं। इसी क्रम में इब्राहिम अल्काजी, हबीब तनवीर आदि निर्देशकों का भी महत्त्व है।

समग्रतः इप्टा, भारतेन्दु काल में शुरू हुई जन नाटकों की परम्परा का ही प्रगतिशील संस्करण है। इसी क्रम में पृथ्वी थियेटर, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय आदि संस्थानों का भी योगदान है।

ठीक है

5½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) 'कविवचन सुधा' पत्रिका

भारतेन्दु युग हिन्दी साहित्य व हिन्दी भाषा का संस्कार व परिष्कार करता है। जहाँ हिन्दी साहित्य अपना मध्यकालीन चोला छोड़कर आधुनिकता के गुण धारण करता है वहीं हिन्दी भाषा "ब्रज की हिंदार बोली" त्यागकर खड़ी बोली का वरण करती है।

प्रकाशन वर्ष भी बताएँ

इसी क्रम में पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका आती है। भारतेन्दु युग में हिन्दी प्रदीप, ब्राह्मण, हरिश्चन्द्र मैगजीन, बाल बोधिनी पत्रिका का प्रकाशन होता है। 'कविवचन सुधा' का महत्त्व भारतेन्दु द्वारा संपादन होने तथा उनके हिन्दी भाषी नजरिये के प्रकाशन में समाहित है। अपने एक लेख में भारतेन्दु लिखते हैं- "हिन्दी नए चाल में ढली 1873 में।"

यहाँ "नए चाल" का आशय हिन्दी की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

संस्कृत निष्ठ तथा उर्दू फारसी के आधिक्य वाली शैली के समायोजन से हो इन्हीं पत्र-पत्रिकाओं, निबंधों, कथाओं, नाटकों के माध्यम से हिन्दी का स्वरूप क्रमशः स्थिर होने लगता है। आगे चलकर महावीर प्रसाद द्विवेदी के अनुशासनपूर्ण नेतृत्व से हिन्दी का व्याकरण संबद्ध सुव्यवस्थित रूप निखर कर आता है।

समग्रतः हिन्दी साहित्यिक व भाषिक विकास की प्रक्रिया में विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। आज भी हंस, प्रभासाक्षी, जानकीपुल इत्यादि ब्लॉग इस जिम्मेदारी का निर्वहन कर रहे हैं।

अनावश्यक

और बेहतर

और

5/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(घ) संस्मरणकार कांति कुमार जैन

संस्मरण हिन्दी साहित्य की एक विधा है जिसमें अपनी स्मृति के माध्यम से किसी घटना, व्यक्ति व परिवेश का चित्रण किया जाता है। रचनाकार की स्मृति पर आधारित होने के कारण इसमें लेखकीय निजता की सम्भावनाएँ अधिक होती हैं।

हिन्दी साहित्य में संस्मरण, अपेक्षाकृत नई विधा है जिसका विकास मुख्यतया 20वीं सदी के उत्तरार्द्ध में हुआ है। इसके रचनाकारों में कांति कुमार जैन, देवेन्द्र सत्यार्थी, महादेवी वर्मा, आदि हैं। कांति कुमार जैन के संस्मरण अपने वर्णन की विषदता और सूक्ष्म अंकन के कारण विशिष्ट माने जाते हैं।

उनके संस्मरणों में यथास्थिति का चित्रण मात्र नहीं मिलता अपितु सूक्ष्म संवेदनाएँ, रचनात्मक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

तारतम्यता तथा उनका अपना नजरिया मिलता है।

समग्रतः रेखाचित्र के समान संस्मरण (मैमोयर्स) भी किसी व्यक्तित्व को देखने की विशिष्ट दृष्टि प्रदान करता है।

20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ङ) कहानी का रंगमंच

कहानी के रंगमंच से आशय कहानी में वर्णित घटनाक्रम में रचनात्मक हस्तक्षेप के साथ उसे अभिनेय स्वरूप प्रदान करने से है।

इस विधा में न तो कहानी को ज्यों का त्यों रंगमंच पर उतार दिया जाता है और न ही रंगमंच पर कहानी-पाठ होता है अपितु यह इन दोनों के बीच की विधा है।

बीते कुछ दशकों में इस दिशा में कुछ रचनात्मक प्रयास हुए हैं जिनमें देवेन्द्र (राज) अंकुर का नाम महत्त्वपूर्ण है। इन्होंने प्रेमचन्द, प्रसाद आदि की प्रसिद्ध कहानियों के अभिनेय संस्करण तैयार किए हैं।

वर्तमान में, जबकि मोहन राकेश सदृश नाटककार हिन्दी रंगमंच की नयी दिशाएँ खोल चुके हैं, कहानी के रंगमंच की सम्भावनाएँ बढ़ गई है। इसी क्रम में प्रभावी निर्देशक जैसे इब्राहिम

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

अल्काजी, हबीब तनवीर, तेंदुलकर आदि ने भी सबल व संश्लिष्ट प्रयोग किए हैं।

समग्रतः जिस प्रकार 19 वीं शताब्दी में एक नगण्य सी प्रतीत होने वाली "फिल्म" को रंगमंच से कई गुना ज्यादा लोकप्रियता मिली है, उसी प्रकार कहानी के रंगमंच के विकास की दिशाएँ भी कम नहीं हैं।

गहराई लाएँ
अध्ययन अपेक्षित
31/1
16

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) क्या भक्तिकाव्य को लोकजागरण का काव्य कहना उचित है? सुचिंतित विचार प्रस्तुत कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) दिनकर की काव्यकृति 'रश्मिरथी' के प्रतिपाद्य पर प्रकाश डालिये। 15

4. (क) समकालीन हिंदी उपन्यास में 'स्त्री-विमर्श' की उपस्थिति की पहचान कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी उपन्यास की परम्परा का विकास प्रेमचन्द युग में होता है इनके पहले के उपन्यासों में उपदेशात्मकता, तिलिस्म, ऐतिहासिकता आदि के तत्व मिलते हैं जिनमें स्त्री-विमर्श का सामान्यतः अभाव था।

कालांतर में प्रेमचंद रचित निर्मला, सेवासदन; जैनेन्द्र रचित परख, सुनीता; यशपाल रचित दिव्या आदि में प्रभावी रूप से स्त्री-विमर्श की उपस्थिति दिखती है किन्तु कुछ आलोचकों का मानना है कि संवेदना तथा स्वयं-वेदना का अंतर इन उपन्यासों में स्त्री को दयापात्र मात्र बना कर रख देता है

इन आक्षेपों और सीमाओं से समकालीन हिन्दी उपन्यास धारा उबर लेती है इस धारा में ममता कालिया, कृष्णा सोबती, मृदुला सिन्हा,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

सम्मत युगताई

मन्नू भण्डारी, राजिया बेगम आदि की प्रभावी उपस्थिति दिखती है। इन उपन्यासों में स्त्री को वंचिता या शोषिता की जगह समान अधिकार माँगने वाली बोल्ड महिला के रूप में दिखाया गया है।

इस क्रम में कृष्णा सोबती का नाम सबसे महत्वपूर्ण है। उनकी कहानी 'मित्रो मरजानी' काफी बोल्ड तरीके से स्त्रियों पर लादी गई यौन वर्जनाओं का अतिक्रमण करती है। इनके कथा-संग्रह व उपन्यास यथा बदली बरस गई, गुलाब जल गंडेरियां आदि इस दृष्टि से महत्वपूर्ण प्रयास है।

इसी क्रम में मन्नू भंडारी रचित 'आपका बंटी' भी एक महत्वपूर्ण उपन्यास है जिसमें क्षरित होते दाम्पत्य सम्बन्धों और स्त्री की एक पितृसत्तात्मक समाज में होती दुर्गति

की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया है। साथ ही साथ कैसे एक अबोध बालक पर दाम्पत्य विकृतियों का प्रभाव पड़ता है उसका भी चित्रण मिलता है।

हाल ही में हिन्दी में रचित उपन्यास 'रेत समाधि' (अंजलि श्री) के अंग्रेजी संस्करण को प्रतिष्ठित बुकर पुरस्कार मिला है जो समकालीन साहित्य में स्त्री विमर्श की प्रभावी उपस्थिति दर्ज करता है।

8/20

अन्य प्रमुख समकालीन महिला उपन्यासकारों एवं उपन्यासों की चर्चा करें

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर 35
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) भीष्म साहनी के उपन्यासों में निहित सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालिये। 15

भीष्म साहनी प्रेमचंदोत्तर सामाजिक-प्रगतिवादी धारा के रचनाकार हैं। इनके उपन्यासों में प्रमाणीय सैद्धांतिक भाव-बोध के इतर समाज के यथार्थ चित्रण मिलते हैं। उनमें समाज में व्याप्त जातिभेद, साम्प्रदायिकता, नफरत, राजनीतिक पार्टियों की अवसरवादिता अपने पूरे नंगेपन के साथ चित्रित है।

भीष्म साहनी के उपन्यासों में तमस (1973), मय्यादास की माड़ी, नीलू निलिमा नीलोफर, और प्रमुख हैं। इनमें से तमस में स्वतंत्रता के दौरान हुए विभाजन की मार्मिक तस्वीर मिलती है।

तमस में लाहौर और उसके आस पास के गाँवों का 5 दिनों का चित्रण मिलता है एवं असामाजिक तत्त्व द्वारा सुअर मारकर मस्जिद की सीढ़ियों पर फेंक देने से भीषण दंगे भड़क जाते हैं।

कड़ियाँ, बसंती, मय्यादास की माड़ी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अंग्रेज अधिकारी रिचर्ड की योग्यता होते हुए भी कोई भी त्वरित कार्यवाही नहीं करता है। राजनीतिक पार्टियाँ गिद्ध की तरह भटके हुए लोगों को भुनाने की कोशिश में लगी हैं। वहीं मारकाट, बलात्कार, आगजनी में पूरा शहर जल उठता है।

इन्हीं सब घटनाक्रम के माध्यम से 'तमस' अपने समय के अंधकार को दर्शाता है। गौरतलब है लगभग यही सामाजिक-राजनीतिक विकृतियाँ मन्नू भंडारी के उपन्यास 'महाभोज' में प्रमुखता से चित्रित हुई हैं।

तमाम्ततः उपन्यासकार की सामाजिक चेतना संदेश देती है कि आजादी के सही

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मायनों में अर्थ सामाजिक न्याय, अधिकार, शांति, सर्वांगीण विकास आदि में निहित है।

6/15

प्रभावी ढंग उपन्यासों की विशेषताओं को भी स्पष्ट करें

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अकहानी आंदोलन का परिचय देते हुए उसकी प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिये। 15

अकहानी आंदोलन के अंतर्गत 1960 व 70 के दशकों में रची गई वे कहानियाँ हैं जिनमें निराशा, विसंगतिबोध तथा नकार का भाव मिलता है। ये कहानियाँ उस पृष्ठभूमि में लिखी हैं जिसमें स्वतंत्रता से पूरी तरह मोहभंग हो चुका है, शहरी मध्यवर्गीय जीवन अपने निरर्थकताबोध से साल रहा है तथा सूरे आदर्श व अब नहीं सुहाते हैं।

इस दौर में रची गई कहानियों में अस्तित्ववाद का प्रभाव भी दिखता है जिसमें ये माना जाता है कि अंततः हर निर्णय अधूरा साबित होता है। इस दौर की कहानियों की छाप "एब्सर्ड नाटक" तथा 'अकविता' आंदोलन में भी देखी जा सकती है जो लगभग ऐसी ही

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

चुनौतियों से गुजर रही हैं।

अंततः आगे चलकर जनवादी कहानी, समकालीन कहानी, युवा कहानी आदि अकहानी को निराशा के अंधेरों से बाहर निकालती हैं।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com

Copyright - Drishti The Vision Foundation

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) नई कहानी की सीमाएँ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

1950 के दशक में निर्मल वर्मा की कहानी परिंदे से नई कहानी का सूत्रपात होता है। नई कहानी में नयापन अपनी संवेदना और शिल्प के स्तर पर है जो अपने में कई विशेषताओं को समेटे हैं।

आलोचकों ने नई कहानी की सीमाएँ निम्नलिखित रूपों में गिनाई हैं।

(i) नई कहानी में वर्णित यथार्थ, शहरी मध्यवर्ग का यथार्थ है। "गाँव, जंगल और जमीन" नई कहानी में अपनी उपस्थिति कम ही दर्ज कराते हैं।

उदा. कमलेश्वर व मोहन राकेश की कहानियाँ।

(ii) नई कहानी, यौन वर्जनाओं को तोड़ने पर अत्यधिक ध्यान देती है। ~~अमर~~ प्रतीकात्मक रूप के स्थान पर कहानी की मूल विषयवस्तु ही यौन वर्जनाओं के अतिक्रमण पर आधारित लगती है।

उदा. रमेश बख्शी की कहानी।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(iii) नई कहानी में समाधान पक्ष नदारद है। जबकि साहित्य का धर्म दर्पण के साथ-साथ दीपक होना भी है।

(iv) नई कहानी का आत्म संघर्ष, ईड व ईगो के मध्य का है। अर्थात नई कहानी के कई रचनाकार सामाजिक मर्यादाओं की अवहेलना करके व्यक्तिवादी सोच दर्शाते हैं जो कहीं न कहीं समाजवादी मूल्यों का विरोध भी है।

उदा. कृष्ण बलदेव वैद की कहानी "मेरा दुश्मन"

(v) नई कहानी में आदिवासी विमर्श की भी कमी है। जबकि स्त्री-विमर्श व दलित विमर्श को पर्याप्त स्थान मिला है। उदा. जयप्रकाश कर्दम व कृष्णा सोबती की कहानियाँ।

समग्रत: नई कहानी वर्तमान में विभिन्न धाराओं में जीवित दिखाई देती है तथा जनसामान्य से निकटता के तत्त्व भी दिखते हैं।

उदा. युवा कहानी, जनवादी कहानी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) दिनकर की कविता में ओज

दिनकर का रचनाकाल राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम के चरम उत्कर्ष की पृष्ठभूमि से शुरू होता है अत: स्वाभाविक है उनमें एक विद्रोहीपन व ओजस्विता घुली हुई मिलती है।

दिनकर की रचनाएँ कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, परशुराम की प्रतीक्षा, हुंकार, उर्वशी आदि हैं।

ओज का उदाहरण रश्मिरथी की पंक्तियों में

"सदियों बुझी राख सुगबुगा उठी
मिट्टी सोने का ताज पहन इठलाती है
दो राह, समय के रथ का घर्घर नाद सुनो
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।"

इसी प्रकार कुरुक्षेत्र में विश्व शांति का मार्ग सुझाते हुए दिनकर कहते हैं -

जब तक मनुज-मनुज का सुख भाग नहीं सम होगा
शमित न होगा कोलाहल संघर्ष नहीं ये कम होगा।

दिनकर की कविता में सरल शब्दों का आद्यंत प्रयोग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हुआ है जिसके कारण उनकी कविताओं में मंचीयता का गुण विद्यमान है। काव्य गोष्ठियों में मंचों से समवेत पाठ करने पर दिनकर की कविता में अपूर्व ओज-तेज दिखाई देता है। उनकी कविताओं की लोकप्रियता तथा राष्ट्रीय चेतना के कारण इन्हें <u>'राष्ट्रकवि'</u> के नाम से भी जाना जाता है।

समग्रतः दिनकर की कविता हताश व पतित मन में नव ऊर्जा का संचार करने में पूर्णतया सक्षम है। इसकी एक बानगी –

वहीं तक वन में घूम-घूम
बाधा विघ्नों को चूम-चूम
× × × × × ×
× × × × × ×
सौभाग्य न सब दिन सोता है
देखें मन आगे क्या होता है।

Good 6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) मिश्रबंधु विनोद

मिश्रबंधु रचित ग्रंथ <u>मिश्रबंधु विनोद</u> का हिन्दी साहित्येतिहास की परम्परा में विशिष्ट स्थान है। इसमें उन्होंने लगभग <u>5000 रचनाकारों</u> का विवरण प्रस्तुत किया है तथा उनका <u>व्यवस्थित रूप से विश्लेषण</u> भी किया है।

मिश्रबंधु विनोद, <u>20 वीं सदी</u> के आरम्भिक वर्षों में लिखा जाता है तथा साहित्यकारों की <u>प्रमुख प्रवृत्तियों</u> तथा <u>वर्गीकरण</u> के आधार पर एक <u>संदर्भ ग्रंथ</u> के रूप में प्रतिष्ठित है। हिन्दी के शिखर आलोचक रामचंद्र शुक्ल ने भी इनके <u>प्रयास की तारीफ</u> की है।

मिश्रबंधु विनोद की हिन्दी के साहित्यकारों की विश्वसनीय जानकारी के स्रोत के रूप में आज भी प्रासंगिकता बनी हुई है। कालांतर में इसी प्रयास को नागरी प्रचारिणी सभा आदि संस्थाओं द्वारा और भी संवर्धित किया जाता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

वर्तमान समय में सूचना क्रांति के कारण फेसबुक, लिंक्डइन के माध्यम से इन्हीं साहित्यकारों का वर्णन व परिचय मिल जाता है। ~~[illegible]~~ आज भी हिन्दी समय, गद्यकोश, पद्यकोश आदि वेबसाइट भी विस्तृत जानकारी उपलब्ध करवाती हैं। वस्तुतः यह परम्परा मिश्रबंधु विनोद से ही शुरू होती है

आवश्यक

G-1 A

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) संस्मरणकार कांतिकुमार जैन

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) हिंदी साहित्येतिहास-लेखन में आचार्य रामचंद्र शुक्ल की सीमाओं का विवेचन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

~~हिन्दी~~ आचार्य रामचंद्र शुक्ल (1884-1941) हिन्दी साहित्येतिहास के केन्द्रीय बिन्दु हैं। उन्होंने साहित्येतिहास लेखन की नई परम्पराओं को जन्म भी दिया तथा पहले से चली आ रही परिपाटी का परिष्करण भी किया।

इसी क्रम में उनकी आलोचना पद्धति तथा आलोचना कर्म की सीमाओं का विश्लेषण निम्न बिन्दुओं के माध्यम से किया जा सकता है-

(1) शुक्ल जी ने साहित्य की मुक्तक परम्परा को, प्रबंध से कम कर आँका जिससे कबीर और सूर, जायसी और तुलसी की तुलना में कम महत्त्व के दिखते हैं जबकि ऐसा नहीं है।

(2) शुक्ल जी, कबीर की कविताओं को एक व्यवस्थित शिल्प की अनुपस्थिति तथा रहस्यवादी तत्वों के कारण महत्त्व नहीं देते हैं। हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ~~कालांतर~~ कालांतर में

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कबीर का महत्त्व पुनर्स्थापित करते हैं। उन्होंने "कबीर को वाणी का डिक्टेटर" तक कहा है।

(3) शुक्ल जी ने अपने काल के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण काव्यांदोलन छायावाद को भी प्रतीकवाद कहकर नकार दिया। हालाँकि द्विवेदीकालीन स्वच्छंदतावादी धारा उन्हें ठीक लगती थी।

(4) शुक्ल जी अपने समय के स्वाधीनता आंदोलन से भी कटे हुए से नजर आते हैं। हालाँकि रामविलास शर्मा ने इस आक्षेप का बचाव किया है।

(5) शुक्ल जी का ध्यान पद्य साहित्य की आलोचना में ही ज्यादा रमा है, गद्य की ओर उनकी आलोचनात्मक दृष्टि प्रायः कम ही गई है।

(6) शुक्ल जी ने सिद्ध-नाथ साहित्य को हिन्दी साहित्य का अंग मानने से ही इनकार कर दिया।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

इनके अनुसार सिद्ध-नाथ साहित्य सांप्रदायिक विचारधारा का प्रचार मात्र है।

आगे चलकर हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने इसका बचाव किया।

(7) शुक्ल जी ने आदिकाल का नामकरण, वीरगाथा काल करने की गलती की थी। किन्तु उस काल में विद्यापति, खुसरो आदि का साहित्य भी प्राप्त है।

(8) अंततः उन्होंने भक्ति आंदोलन के उद्भव में इस्लामी आक्रमण को उत्तरदायी माना जो कि केवल अंशतः सत्य है।

समग्रतः किसी भी रचनाकार या आलोचक की दृष्टि अपने समय व परिस्थितियों से निर्धारित होती है। अतः इन कमियों में उनके अभिजात्य परिवेश का भी योगदान दिखाई देता है। इन सब सीमाओं के बावजूद रामचंद्र शुक्ल हिन्दी साहित्येतिहास के शीर्ष व्यक्तित्व हैं।

12/20

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-1, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-1, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

(ख) 'आधे-अधूरे' नाटक की संवेदना पर प्रकाश डालिये। 15

आधे-अधूरे नाटक मोहन राकेश द्वारा रचित अंतिम पूर्ण नाटक है। यह नाटक अपने नवीन प्रयोगों के माध्यम से तो ध्यान आकर्षित करता ही है, संवेदना के माध्यम से भी एक मील का पत्थर है।

मोहन राकेश के नाटकों की मूल संवेदना आधुनिक मध्यवर्गीय जीवन के द्वंद्वों से निर्मित है। जिस प्रकार 'आषाढ़ का एक दिन' में सत्ता व सृजन के बीच अंत तक द्वंद्व बना रहता है उसी प्रकार आधे-अधूरे में भी विसंगति व द्वंद्व की उपस्थिति है।

आधे-अधूरे में महेन्द्रनाथ व सावित्री की कथा के माध्यम से क्षरित होती दाम्पत्य जीवन की सच्चाई बताई गई है। महेन्द्रनाथ व सावित्री एक दूसरे से नफरत करते हैं लेकिन एक दूसरे

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

के साथ जिंदगी गुजारने को विवश हैं।
इस संदर्भ में मोहन राकेश का अपनी कहानियों के संदर्भ में कथन महत्वपूर्ण है - "मेरी कहानियाँ अकेलेपन में संबंधों की यंत्रणा झेलते लोगों की कहानियाँ हैं।"

मोहन राकेश की उपरोक्त दृष्टि अस्तित्ववाद के मूल्यों से मिलकर बनी है जिसमें ये माना जाता है कि अंततः हर विकल्प अधूरा है। शहरी मध्यवर्गीय जीवन इसी अधूरेपन से जीवन पर्यंत पीड़ित रहता है और 'आधे-अधूरे' में इसी संवेदना को उकेरा गया है।

'आधे-अधूरे' अपने नाटकीय प्रयोग के कारण भी चर्चा का विषय रहता है। इसमें एक ही व्यक्ति के माध्यम से चार अलग-2 भूमिकाएँ करवायी गयी हैं। शिल्प के आधार पर भले ही बहुत सफल न रहा हो लेकिन यह आदमी की गुम होती पहचान का परिचायक है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

इसके अतिरिक्त नाटक में मौन वर्जनाओं को खुली छूट मिली है ~~[illegible]~~ चूंकि महेन्द्रनाथ निजलिजे स्वभाव का व्यक्ति है, सावित्री को अन्य पुरुषों का संसर्ग काम्य है।

समग्रतः आधे-अधूरे अपने नाम के अनुरूप ही संवेदना को व्यंजित करता है। 'मिस पाल', 'लहरों के राजहंस', 'आदमी और खण्डहर' आदि कृतियों से इसकी संवेदनात्मक तारतम्यता महसूस की जा सकती है।

Good 8

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिंदी की आंचलिक उपन्यासधारा पर प्रकाश डालिये।

हिन्दी की आंचलिक उपन्यासधारा का सूत्रपात प्रेमचंद युग में ही शिवपूजन सहाय के उपन्यास 'देहाती दुनिया' से होता है किन्तु जिस व्यक्तित्व ने इसे नए तेवर प्रदान किये वह हैं फणीश्वरनाथ रेणु।

रेणु द्वारा 1954 में रचित मैला आँचल इस उपन्यासधारा की सफलतम कृतियों में से एक मानी जाती है। मैला आँचल, रेणु की पहली रचना होते हुए भी शैलिपक नवाचार तथा संवेदनात्मक स्पष्टता के कारण आंचलिक उपन्यासों के प्रतिमान के रूप में स्थापित हुआ।

इसी क्रम में अन्य उदाहरण मिलते हैं

(i) राही मासूम रजा - आधा गांव
(ii) नागार्जुन - बलचनमा, वरुण के बेटे, रतिनाथ की चाची

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष [illegible] मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596 [illegible]

दृष्टि The Vision

(iii) उदयशंकर भट्ट - सागर, लहरें और मनुष्य

इसमें राही मासूम रज़ा के उपन्यास आधा गांव में नर-समुदाय के अंतरंग जीवन की झलकियां मिलती हैं। वहीं स्त्री परम्परा से मनोहर श्याम जोशी कृत 'कसप' उपन्यास कुमाउँनी पृष्ठभूमि पर लिखा गया है जिसमें कैशोर प्रेम को विषय बनाया गया है।

X आवश्यक

वहीं रेणु की कहानियों यथा पंचलाइट, लालपान की बेगम, राजा निरबंसिया आदि में भी अंचल का चित्रण मिलता है। साथ ही साथ अन्य अंचल को चित्रण मिलता है।

अपेक्षित नहीं है

उपन्यास जैसे परती परिकथा में भी आंचलिकता घोलने की कोशिश दिखती है किन्तु मैला आंचल जैसी सफलता नहीं मिली है।

आंचलिक उपन्यासधारा में अपने अंचल का समग्रता से चित्रण कर देना ही लक्ष्य होता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

अपने विस्तृत वर्णन, बिखरे कथानक व चरित्रों की अधिकता के कारण आंचलिक उपन्यासों में अंचल ही नायक बनता है। इसमें अंचल की भौगोलिक, सांस्कृतिक विशेषताएँ इसी प्रखरता से प्रकट होती हैं जो पाठक को [illegible] अंचल की मानसिक यात्रा करने जैसा आभास कराती है।

समग्रतः, आंचलिक उपन्यासधारा आज भी क्षीण रूप में प्रचलित है। किन्तु शहरीकरण और उपभोक्तावाद के कारण रचनाकारों का रुझान इस दिशा में कम ही रहा है।

ठीक है

8½/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) 'अंधेर नगरी' नाटक की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

'अंधेर नगरी' भारतेन्दु रचित प्रसिद्ध नाटक है जो कि संभवतया हिन्दी रंगमंच के इतिहास में सबसे ज्यादा खेला गया है। इस नाटक में एक वृद्ध संत तथा उनके दो युवा शिष्यों की कथा है जो घूमते-घामते एक नगर में पहुँचते हैं जहाँ हर चीज का दाम एक टका है।

किसी रचना की प्रासंगिकता के तीन आयाम हो सकते हैं (i) अपने रचनाकाल में। (नवजागरण) (ii) वर्तमान काल में। (iii) विस्तृत अर्थों में अथवा सर्वकालिक रूप में। अंधेर नगरी का रचनाकाल (1850-1900) भी है भारत का नवजागरण काल जब सामाजिक-साहित्यिक-सांस्कृतिक स्तरों पर तीव्र गति से संक्रमण हो रहा था।

(i) नवजागरण के दौर में भारतेन्दु का उद्देश्य अपने नाटकों के माध्यम से राजनीतिक-सामाजिक विकृतियों की तरफ जनता का

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

ध्यान आकर्षित करना है। कई जगह उनका व्यंग्य स्पष्ट रूप में प्रकट होता है-

"चना हाकिम लोग जो खाते
सारा हिन्द हजम कर जाते"

"अंधाधुंध मच्यौ सब देसा
मानहुँ राजा रहत बिदेसा"

यहाँ "अंधेर नगरी" उस समय की राजनीतिक विसंगतियों का ही सूचक है। चूँकि उन्हें अपने नाटक को ब्रिटिश सरकार से प्रतिबंधित होने से बचाना है अतः कथा का सहारा लिया गया है।

इस तरह जनता में जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से लिखी गई यह रचना प्रासंगिक है।

(ii) आज लगभग 150 वर्षों के बाद भी इसकी प्रासंगिकता के आयाम मौजूद हैं। कहने को तो लोकतंत्र और संविधान का शासन है किन्तु अभी भी $\frac{1}{5}$ देश गरीबी रेखा से नीचे जीवन-यापन

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

करने को विवश है। (सी. रंगराजन रिपोर्ट)

भ्रष्टाचार सूचकांक में भारत का स्थान अपने पड़ोसी देशों नेपाल व बांग्लादेश से भी नीचे है।

वहीं बढ़ती मंहगाई जनसामान्य की कमर तोड़ रही है।

अतः सीमित अर्थों में ही सही, 'अंधेर नगरी' आज भी प्रासंगिक है।

(iii) अंधेर नगरी की सार्वकालिक प्रासंगिकता निर्विवाद्य है। जब तक राष्ट्र राज्य की अवधारणा जीवित है, जब तक नौकरशाही व चापलूस अफसरों की चलती रहेगी अंधेर नगरी किसी न किसी रूप में प्रासंगिक बनी रहेगी।

नाटक के अंत में राजा की फाँसी से लटककर मृत्यु करवा देने के पीछे भी भारतेन्दु की यही इच्छा काम करती है।

समग्रतः अंधेर नगरी की रचना भारतेन्दु के लिये साहित्य धर्म से बढ़कर एक सामाजिक धर्म है।

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

जो जनजागरण की भावना भारत-दुर्दशा में दिखाई देती है वही अंधेर नगरी की भी मूल भावना है।

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) 'जनवादी कहानी' का परिचय दीजिये।

15

हिन्दी कहानी की शुरुआत 20वीं सदी के आरम्भिक वर्षों में माधवराव सप्रे की कहानी एक टोकरी भर मिट्टी से मानी जाती है। धीरे-2 प्रेमचंद, जैनेन्द्र, अज्ञेय के हाथों कहानी कला परिष्कृत होती है। इसी क्रम में साठोत्तरी कहानी के काल में 'जनवादी' कहानी की धारा भी मिलती है।

'जनवादी' कहानी से आशय ऐसी कहानी कला से है जो जनपक्षधर हो। जो जनसामान्य के संवेदनाओं और सम्वेदनों को व्यक्त करे। जो न केवल दर्पण का काम करे बल्कि दीपक की तरह राह भी सुझाए। इसी क्रम में 1970 व 80 के दशकों में प्रगतिवादी धारा के समकक्ष ही जनवादी कहानी का उदय होता है।

इस धारा को "नई कहानी" की सीमाओं से जोड़कर भी देखा जा सकता है जहाँ नई कहानी केवल मध्यवर्गीय जीवन के आत्मसंघर्ष में ही रमी रहती है, जनवादी कहानी लोक-समाज की समस्याओं से जूझती है। आजादी से मोहभंग के बाद, जनवादी कहानी स्वतंत्रता, सामाजिक न्याय, दलित-समस्या आदि को नए तेवर के साथ उठाती है।

इसके रचनाकारों में धर्मवीर भारती, जयप्रकाश कर्दम, आदि का नाम प्रमुख है। कालांतर में सूचना-क्रांति के माध्यम से जनवादी कहानी और लोकप्रियता को प्राप्त करती है।

समग्रतः लोकतांत्रिक व्यवस्था को मूल्य के स्तर पर धारण करने के कारण जनवादी कहानी का महत्त्व है।

3/15

अधूरा उत्तर

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) महादेवी वर्मा की वेदनानुभूति पर प्रकाश डालिये। 15

यूँ तो वेदना की उपस्थिति छायावादी कविताओं की विशेषता है किन्तु छायावाद के चारो कवियों में जिनकी रचनाओं में वेदना पूरी तीव्रता से प्रकट होती है वह है महादेवी वर्मा।

छायावादी कविता "मैं" की कविता है। अर्थात् कवि अपने निजत्व का प्रक्षेपण अपनी कविताओं के माध्यम से करते हैं। किन्तु छायावाद का काल (1918-36) अपने मध्यकालीन अवशेषों तथा पितृसत्तात्मक सोच को साथ लिये हुए है। छायावादी कवि निरंतर अपने समय की सामाजिक-सांस्कृतिक जड़ताओं से टकराते हैं। इस टकराने में उनकी हार निश्चित है अतः पीड़ा या वेदना का तत्त्व छायावादी काव्य की विशेषता है।

चूँकि महादेवी एक स्त्री हैं अतः उन पर लादी गई सामाजिक वर्जनाओं का बोझ भी ज्यादा है। इसीलिये महादेवी की कविताओं में वेदना

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

~~अ~~. अपनी पूरी प्रखरता के साथ मिलती है।

महादेवी के काव्य संग्रह नीरजा, यामा, दीपशिखा आदि में इनके गीत व कविता संकलित हैं जिनमें रहस्यवादी स्वर तथा वेदना मिलती है। उनकी एक बानगी -

" मैं विरह में चिर हूं
मिलन का नाम मत ले"

" नीर भरी दुख की बदली"

" मेरे प्रियतम को भाता है
तम के परदे में आना"

इनकी वेदना के यही स्वर इनके रेखाचित्रों के संग्रह पथ के साथी, अतीत के चलचित्र आदि में भी दिखते हैं। "अतीत के चलचित्र" में तो समाज द्वारा तिरस्कृत महिलाओं का चित्र अत्यंत सजीव बन पड़ा है।

गौरतलब है कि मध्यकाल में इन्हीं सामाजिक

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

वर्जनाओं के बीच मीराबाई भी कृष्ण भक्ति कर रही थी। उनकी कविताओं में सर्वत्र एक विरह पीड़ित नारी की वेदना मिलती है। महादेवी को इन्हीं समानताओं के कारण 'आधुनिक मीरा' भी कहा जाता है।

समग्रतः यह अंतर की वेदना महादेवी की कविताओं में को और प्रखर बनाती है तथा पाठकों को सम्बल प्रदान करती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation